55

''तराज़ू में तौला गया''

(18:3-17, 22-24)

बाबुल के राजा बैलशस्सर ने अपने हज़ारों अधिकारियों को एक दावत दी।[1] जश्न के चरम पर, राजा ने सोने और चांदी के वे बर्तन मंगवा लिए, जो यरूशलेम के मन्दिर से लाए गए थे। पवित्र बर्तनों में शराब पीते और इब्रानियों के परमेश्वर का मज़ाक उड़ाते हुए दावत में भाग लेने वालों के ठहाकों से महल गूंज रहा था।[2] परन्तु एक हाथ को दीवार पर ''मने,[3] मने, तकेल[4] और ऊपर्सीन''[5] (दानिय्येल 5:25) लिखते देख उनकी हंसी गुल हो गई।

राजा को बताया गया था कि इन शब्दों के तीन अर्थ हैं: (1) परमेश्वर ने उसके राज्य को सीमित कर दिया और उसका अंत होने वाला है (आयत 26); (2) उसे ''तराज़ू में तौला गया और हल्का पाया गया'' था (आयत 27) और (3) उसका राज्य बांटकर मादी और फारसियों को दिया जाना था (आयत 28)। ''उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मार डाला गया'' (आयत 30)। भविष्यवाणी के अनुसार, बाबुल नगर मादा-फारसियों के हाथों दे दिया गया (आयत 31)।

प्राचीन बाबुल में नये नियम का समकालीन रोमी नगर था, जिसे प्रकाशितवाक्य में ''बड़ा बाबुल'' कहा गया है।[6] रोम का ''दीवार पर लिखा'' प्रकाशितवाक्य 18 में मिलता है। डेनियल रस्सल ने कहा था कि यह ''समझ आने वाला सबसे आसान अध्याय है।''[7] वही संदेश बार-बार दोहराया गया है कि ''बाबुल (अर्थात रोम) गिर गया।'' पूरे अध्याय की समीक्षा हम बाद में विस्तार से करेंगे, परन्तु अभी मैं वचन से यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इसमें रोम के बारे में क्या बताया गया है।[8] वह बड़ा नगर न्याय के परमेश्वर के तराज़ू पर तौला जाने पर हल्का क्यों पाया गया? अध्याय 18 में हर नगर और नागरिक के लिए सबक है।

अनोखा परन्तु विनाश हो रहा
(18:5, 7, 14, 16, 22, 23)

वचन के हमारे भाग में, रोम की तुलना ''मलमल, और बैंजनी, और किरमिची कपड़े पहिने ... और सोने, और रत्नों, और मोतियों से''[9] सजी (आयत 16) ''रानी'' (आयत 7) से की गई है। आयत 14 उसे ''मोहक और भड़कीली'' (NEB) बताती है। अमेरिकी कवि एडबगर एलन पो ने ''उस शान को जो रोम की थी'' लिखा है:[10]

> नये नियम के समयों में रोम पूर्ण विकसित था। ... कुलीनों ने ... उपनगरीय बस्तियों और देहाती सम्पत्ति के लाभ बहुत बढ़ा दिए। कैसरों ने ... मुख्य नगर को सरकारी

भवनों से इतना सजा दिया जितना शायद ही कभी किसी राजधानी में हो।[11]

रोम कला का केन्द्र था, जिससे संसार भर का साहित्य और कलात्मक गुणों वाले लोग आकर्षित होते थे। ''वीणा बजाने वालों, और बजनियों, और बंसी बजाने वालों, और तुरही फूंकने वालों का शब्द'' (आयत 22) पूरे नगर में सुनाई दे सकता था। कुशल कारीगरों की कलाकृतियां (आयत 22) आंखों को चुंधिया देतीं और सोच में डाल देती थीं। रोम रौशनियों वाला चमकदार, कार्य करते रहने वाला हलचल भरा और खुशहाल नगर था (आयतें 22, 23)। पर्यटकों के लिए इसके हर कोने में एक नया आश्चर्य था।

अफ़सोस कि रोम सुन्दर ही नहीं, बुरा भी था। आयत 5 कहती है कि ''उसके पापों का ढेर[12] स्वर्ग तक पहुंच गया''[13] था। सदियों पहले लोगों ने आकाश तक जाने के लिए एक बुर्ज बनाने की कोशिश की थी (उत्पत्ति 11)। जो काम ईंटों के साथ बाबुल के लोग नहीं कर पाए थे, वह बड़े नगर बाबुल के लोगों ने पाप के साथ कर दिया था।

रोम में रहने वाले मसीही लोगों के नाम लिखते हुए पौलुस ने अपने समय के समाज अर्थात रोम जैसे ही उस समाज के पाप का विवरण परमेश्वर की प्रेरणा से दिया था जो रोम की तरह ही था:

> इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन।
>
> इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वाभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया।
>
> और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैर भाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौ भी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं (रोमियों 1:24-32)।

थामस फुलर ने कहा है, ''जो पाप में गिर जाता है, वह मनुष्य है,'' ''जो इस पर पछताता है, वह संत है,'' परन्तु ''जो इस पर गर्व करता है, शैतान है।''[14] रोम ने केवल पाप

ही नहीं किया था, बल्कि वह अपने पाप पर गर्व भी करता था। प्रकाशितवाक्य के 17 से 19 अध्याय भ्रष्टता और बदचलनी की स्पष्ट तस्वीर को रंगते हैं, परन्तु विलियम बार्कले ने कहा है कि ''यूहन्ना की रोम की तस्वीर वास्तव में उन कुछ तस्वीरों की तुलना नहीं है, जो स्वयं रोमियों ने बनाई थीं।''[15]

सुलैमान ने कहा था, ''जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है'' (नीतिवचन 14:34)। रोम को पता चलना था कि उसकी ''आकर्षक सुन्दरता मुरझाने वाला फूल'' थी (यशायाह 28:1), और यह कि ''जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा'' (नीतिवचन 22:8)। बुद्धिमान की बात यहां लागू करें तो ''शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु *जो* यहोवा का *भय मानते हैं, उनकी* प्रशंसा की जाएगी'' (देखें नीतिवचन 31:30)।

शक्तिशाली परन्तु बिगड़ा हुआ (18:3, 9, 11-17, 23)

रोम का दूर तक असर करने वाला प्रभाव 17, 18 और 19 अध्यायों में स्पष्ट दिखाई देता है: वह पृथ्वी के देशों पर राज करती थी (17:1, 15); वह उन पर भी राज करती थी, जिनके पास अधिकार था और उन पर भी जिनके पास अधिकार नहीं था (17:18)। रोम के फोरम में लिए गए निर्णय साम्राज्य के हर कोने में लोगों को प्रभावित करते थे। नगर में संसार का व्यापार भी होता था (18:11-17)। ''रोम की बन्दरगाह ऑस्ट्रिया में ख भों की कतार वाला चौक था, जहां व्यापारी कम्पनियों ने ... अपने दफ्तर बनाए हुए थे, और साम्राज्य में यह सत्ता के बड़े केन्द्रों में से एक था।''[16]

भलाई करने के लिए रोम के पास कितनी शक्ति थी! परन्तु जातियों को ऊपर उठाने के बजाय उसने उन्हें नीचा ही किया। स्वर्गदूत ने कहा, ''क्योंकि उसके व्यभिचार की भयानक मदिरा के कारण सब जातियां गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है'' (18:3क)। फिर, आयत 9 पृथ्वी के राजाओं द्वारा ''उसके साथ व्यभिचार करने की बात करती है।'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''व्यभिचार'' का मूल अर्थ ''कुमार/कुमारी संभोग'' है। इसमें शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार का विशेषकर सम्राट की पूजा का व्यभिचार आता है। अपने व्यभिचार से उसने पूरे संसार को भ्रष्ट कर दिया था। (देखें 19:2.)

आयत 23 कहती है कि रोम ने जातियों को ''टोने'' से भरमाया। ''टोने'' झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले छद्म आश्चर्यकर्मों की तरह हो सकते हैं।[17] फिर भी शायद यह पृथ्वी के लोगों पर ''जादू करने'' की बात थी यानी उसने ''सुरक्षा का झूठा दिलासा देकर सब जातियों पर टोना किया।''[18] उसने ''जातियों को यह विश्वास दिलाया कि वे परमेश्वर का साथ छोड़ [सकती हैं], ... के अन्तिम सुरक्षा धन और विलासिता में मिल सकती है।''[19] उसने जातियों को ''अपने झूठे मापदण्डों और सामग्री की पूजा करना'' स्वीकार करा के जादू में डाला।[20]

अच्छाई या बुराई के लिए प्रभावित करने वाला रोम पहला और अन्तिम नहीं था। हर नगर और हर नागरिक का इतना प्रभाव है कि जिससे सहायता या हानि हो सकती है। यीशु ने सकारात्मक प्रभाव की शक्ति पर बल देने के उदाहरणों के रूप में नमक और ज्योति का इस्तेमाल किया (मत्ती 5:13-16)। पौलुस ने नकारात्मक प्रभाव के असर पर बल देने के लिए खमीर का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 5:6; गलातियों 5:9)। एलीहू बुरिट्ट ने कहा है, ''बिना मानवीय प्रसन्नता के घटने या बढ़ने के कोई मानवीय जीव संसार में नहीं हो सकता।[21]

हो सकता है कि आपको यह ध्यान न हो कि आपका अपना प्रभाव हो सकता है, परन्तु आपका प्रभाव है। ''छोटे से छोटे बाल की भी परछाईं होती है।'' बुद्धिमान लोग अपने प्रभाव का इस्तेमाल दूसरों को ऊंचा उठाने के लिए करते हैं, न कि उन्हें गिराने के लिए।

प्रसिद्ध, परन्तु घमण्डी (18:7)

पुरानी कहावत है, ''हर रास्ता रोम को जाता है।'' मैंने प्राचीन रोमी फोरम के बीच में ''सुनहरी मील स्तम्भ'' के खण्डहरों पर खड़े होकर देखा है। इस मील स्तम्भ पर साम्राज्य के दूरवर्ती मुख्य नगर से जुड़ी बड़ी चौकियों की दूरी लिखी गई थी। रोम लाखों लोगों का पसन्दीदा स्थान था।

अफ़सोस कि रोम की प्रसिद्धि ने उसे घमण्डी बना दिया। आयत 7 कहती है कि ''उसने अपनी बड़ाई की ... क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं रानी हो बैठी हूं, विधवा नहीं,[22] और मैं शोक में कभी न पड़ूंगी।' ''[23] उसका व्यवहार ऐसा था, जैसे ''मैं राज करती रहूंगी। मैं कभी नहीं मरूंगी और मेरे बच्चे कभी नहीं मरेंगे।'' ''अनन्त नगर'' का वाक्यांश फ्लेवियन राजवंश के आदर्श वाक्य के रूप में स्वीकारा गया था यानी ये शब्द सिक्कों पर उकेरे जाते थे और शिलालेखों में भी होते थे।

रोम की समस्या सुन्दर, शक्तिशाली या प्रसिद्ध होना नहीं, बल्कि यह थी कि उसने अपने दानों के देने वाले के रूप में परमेश्वर को नहीं माना था। उसने अपने आप को सर्वपर्याप्त समझा था। जी. बी. केयर्ड ने लिखा है कि उसकी गलती ''अक्खड़पन ही नहीं बल्कि बिना किसी बड़ी कमी के बोध के अपने न खत्म होने वाले संसाधनों पर बिना संदेह के विश्वास किया था।''[24]

रोम वाली बात ही कई लोगों के लिए भी सत्य थी। ऑस्ट्रेलिया में रहते हुए मैं ऐसे कई लोगों से मिला, जिन्हें लगता था कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। कइयों का व्यवहार तो ऐसा था जैसे ''हमारे पास सन (अर्थात सूर्य), सर्फ (अर्थात मनोरंजन) और सोशल सिक्योरिटी (अर्थात सामाजिक सुरक्षा) है; हमें परमेश्वर की आवश्यकता क्यों होगी?'' यह सोच केवल ऑस्ट्रेलिया में ही नहीं, बल्कि संसार के अधिकतर भागों में पाई जाती है। समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो हर बुरी बात के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं, परन्तु अच्छा होने पर अपने आप को श्रेय देते हैं।

बुद्धिमान ने कहा है, ''विनाश से पहिले गर्व जाता है, और गिरने से पहिले घमण्डी मन'' (नीतिवचन 16:18; KJV)। यह सच्चाई रोम के नगर में मूर्त रूप में दिखाई देती

थी। 1 से 8 आयतों के अनुसार रोम के विनाश का सबसे बड़ा कारण उसका घमण्ड था। उसके अक्खड़पन से सैकड़ों अन्य पाप उत्पन्न हो गए जो ''आकाश तक ऊंचे ढेर'' बन गए थे और जो परमेश्वर द्वारा शीघ्र ही ''स्मरण किए'' जाने थे। रोम को लगा था कि वह ''अनन्त'' है अर्थात वह अलग रास्ता निकाल लेगी।

कवि पर्सी बी. शैली ने एक विशाल, धूप में पड़ी मूर्ति के बारे में अर्थात ''जंगल में'' खड़ी ''पत्थर की दो बड़ी और धड़ रहित टांगों'' के बारे में लिखा है। टांगों के निकट ''रेत पर, आधा धंसा हुआ,'' ''भौंहे और त्यौरियां चढ़ा और मज़ाक उड़ाता'' बिखरा हुआ पत्थर का सिर पड़ा।

> और नीचे ये शब्द लिखे हैं: ''मेरा नाम राजाओं का राजा ओज़ीमेंडियास है; हे शक्तिमान और निराश, मेरे कामों को देख।''

शैली ने निष्कर्ष निकाला:

> इसके अलावा कुछ नहीं बचा है। उस विशाल खण्डहर के आस-पास जहां तक नज़र जाती है, वीरान और समतल दूर तक फैली हुई है।[25]

कवि द्वारा वर्णित वीरान विशाल मूर्ति पर विचार करें। फिर प्रकाशितवाक्य 18:2, 22, 23 वाले उजाड़े गए नगर को देखें। घमण्ड के परिणामों को समझें। पुराना नियम सिखाता है, ''मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मा वाला महिमा का अधिकारी होता है'' (नीतिवचन 29:23)। नया नियम कहता है, ''क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (लूका 14:11)। आइए, हम अपने परमेश्वर के साथ दीनता में चलना सीखें (मीका 6:8)।

समृद्ध, परन्तु भ्रष्ट
(18:3, 7, 9, 12-14)

रोम के पतन का एक कारण घमण्ड था। आयत 7 फिर से पढ़कर एक और कारण को भी देखें:[26] ''उसने अपनी बड़ाई की *और सुख-विलास किया*।''[27] NASB वाली मेरी बाइबल में इसके अनुवाद ''कामुकता से'' के ऊपर यह मार्जिन नोट है: ''या विलासितापूर्ण।'' यही मूल शब्द आयत 3 में मिलता है, जो ''उसकी कामुकता [या विलासिता] का धन'' है और आयत 9 में ''पृथ्वी के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार और सुख-विलास किया।''

यूनानी शब्दों का अनुवाद ''व्यभिचार'' और ''सुख-विलास'' नये नियम में केवल यहीं मिलता है। आई. टी. बैकविद ने कहा है कि इन शब्दों में ''अत्यधिक विलासिता और अक्खड़पन और शक्ति के व्यर्थ उपयोग में लगे होने की बात'' मिलती है।[28] मूल यूनानी शब्द ''घमण्ड पूर्वक विलासिता में रहना है, जबकि दूसरे इसके बिना हों। इसका अर्थ जीवन की अतिमहत्वपूर्ण वस्तुएं पाना और उनका आनन्द लेना और दूसरों की आवश्यकताओं

को नज़रअन्दाज़ करना है।''[29]

''विलासितापूर्ण जीवन'' रोम के कई लोगों के जीवन का यथार्थ विवरण है।

> पहली शताब्दी में संसार अपने धन को रोम की गोद में डाल रहा था। ... ''देर तक शांति, समुद्र पर सुरक्षा और व्यापार में स्वतन्त्रता ने रोम को बर्तानवी मार्ग से गंगा तक के हर देश की विशिष्ट वस्तुएं और भोजन सामग्री के कारण [व्यापारिक केन्द्र] बना दिया था।''[30]

12 और 13 आयतें संसार भर से रोम की बन्दरगाह में आने वाले सामान का एक नमूना देती हैं:

> ... सोना, चान्दी, रत्न, मोती, और मलमल, और बैंजनी, और रेशमी, और किरमिजी कपड़े, और हर प्रकार का सुगन्धित काठ, और हाथी दांत की हर प्रकार की वस्तुएं, और बहुमूल्य काठ, और पीतल, और लोहे, और संगमरमर के सब भांति के पात्र। और दालचीनी, मसाले, धूप, इत्र लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूं, गाय, बैल, भेड़, बकरियां, घोड़े, रथ ... ।[31]

सोना, हाथी दांत, कीमती लकड़ी, मसाले और गेहूं उत्तरी अफ्रीका से आता था; रत्न और मोती भारत से आते थे; कांस्य कुरिन्थुस से; लोहा काले सागर और स्पेन से; धूप और इत्र अरब से; लोबान मादा से; घोड़े अरमीनिया से और रथ गाऊल से आते थे। परन्तु ये किस देश से आते थे, इससे अधिक महत्व इस बात का था कि अधिकतर वस्तुएं विलासिता की ही थीं।

रोम की नया और अलग होने की भूख बढ़ती जाती थी। आयत 14 ''ऐशो-आराम की सभी चीज़ों'' के साथ उसके द्वारा इच्छा किए जाने वाले फलों[32] की बात करती है। अनुवादित शब्द ''स्वादिष्ट'' सम्भवतया दुर्लभ भोजनों की बात है।[33] अनुवादित शब्द ''भड़कीली'' बनावटी वस्त्रों और जवाहरात के लिए हो सकता है।[34]

रोम की फिज़ूलखर्ची की कहानियां लगभग अविश्वसनीय हैं:

> नीरो की दावतों में से एक में मिस्री गुलाब का दाम लगभग 1,00,000 डॉलर था। मोरों के दिमाग और बुलबुलों की जीभों वाले व्यंजनों में विटेलियुस की विशेष रुचि थी। उसके शासन में 2,00,00,000 डॉलर केवल एक वर्ष से भी कम समय में भोजन पर ही खर्च हो जाते थे। बेहिसाब धन खर्च करने के बाद एक रोमी ने आत्महत्या कर ली क्योंकि 3,00,000 डॉलर के लगभग वेतन में उसका गुज़ारा नहीं चलता। तालमुड में लिखा है, ''संसार में सम्पत्ति के दस माप आए हैं, जिनमें से नौ रोम को और [शेष] संसार को एक ही मिला।''[35]

प्राचीनकाल के लेखक लाइवी ने उनकी धन लोलुपता और विलासिता के लिए ''वे बलाएं'' कहा है ''जिन्होंने हर बड़े राज्य को बर्बाद कर दिया है।''[36] पौलुस ने ''परेमश्वर के नहीं वरन् सुख-विलास ही के चाहने वाले'' कहा है (2 तीमुथियुस 3:4)। दोनों

लेखकों के मन में रोम के लोग ही होंगे।

हो सकता है कि हम में से कोई भी रोम जितनी फिजूलखर्ची और व्यर्थपन कभी न कर पाए, यदि हम अपने साथ ईमानदार हैं तो हमें यह मानना पड़ेगा कि हम उन आशिषों के अच्छे भंडारी बनने में असफल रहते हैं, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। बाइबल फिजूलखर्ची के विरुद्ध शिक्षा देती है (लूका 15:13);[37] पांच हज़ार लोगों को खिलाने के बाद यीशु ने बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा किया था (मत्ती 14:20)।

जो कुछ परमेश्वर ने हमारे हाथ में दिया है, उसकी देखभाल और संभाल पर अगुआई के लिए, उस भंडारी के दृष्टांत पर विचार करें, जिसे अपने स्वामी के सामान को उड़ा देने पर हिसाब देने के लिए बुलाया गया था (लूका 16:1)। यीशु ने कहा:

> इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा! और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा? कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते (लूका 16:11-13)।

मत्ती 16:26 भी प्रासंगिक है: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?''

प्रसिद्ध, परंतु निर्दयी (18:11, 13, 17)

पूरे अध्याय 18 में जो विषय घूमता है, वह है स्वार्थ। रोम की समस्या लूका 16:19-31 वाले धनी मनुष्य या लूका 12:16-21 वाले धनवान मूर्ख से समझाई जा सकती है, जिसने अपने आप से कहा था कि ''प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है: चैन कर, खा, पी, सुख से रह'' (आयत 19)। दोनों का ध्यान दूसरों पर नहीं, बल्कि खुद पर था, और यही बात रोम की थी।

अपने उदाहरण से रोम भी दूसरों को स्वार्थी होना सिखा रहा था। उसके गिरने पर जिन्हें वह मित्र मान रहा था, उन्होंने उसका कोई ध्यान नहीं किया क्योंकि उन पर असर हो सकता था (देखें आयतें 11, 17)।

रोम की निष्ठुर स्वार्थता को 12 और 13 आयतों में आयात की अंतिम वस्तुओं में देखा जा सकता है (वस्तुएं जिन्हें मैंने पहले छोड़ा था)। यह सूची ''और घोड़ों और रथों पर लदे हुए माल *और दासों और मानवीय जीवों* '' के साथ पूरी होती है।[38] रोमी साम्राज्य में मानवीय जीवन सस्ता था।

> अनुमान है कि रोम की एक तिहाई जनसंख्या गुलाम थी;[39] और साम्राज्य में गुलामों की मंडियों में *एक दिन में* आमतौर पर दस हज़ार मनुष्य बिक जाते थे। पूरे साम्राज्य में छह करोड़ के लगभग गुलाम थे, जिनके साथ सामान जैसा व्यवहार किया जाता, अर्थात उन्हें खरीदा और बेचा जाता, उनका उपयोग और दुरुपयोग किया जाता था।[40]

''गुलामों और मानवीय जीवों'' का अक्षरश: अनुवाद ''मनुष्यों की देहों और प्राणों[41]'' होगा। इससे यह बात प्रभावित हो सकती है कि गुलामों के मालिकों की यह सोच थी कि वे अपने गुलामों की देह और प्राण के स्वामी हैं। हेनरी स्वेट ने लिखा है कि घृणित शब्दों का अर्थ ''मानवीय पशु'' है, जो ''धनवानों के बड़े-बड़े [घरों] में भर्ती होने वाले मानवीय जीवन के बलिदान'' के लिए है, ''जिससे [चकले] भरे होते और एम्फीथियेटर के नृशंस मनोरंजन के लिए काम करते थे।''[42]

क्या आज रोम का कोई सानी है? क्या आज भी ऐसे लोग हैं, जो मानवीय जीवन का कोई सम्मान नहीं करते? क्या आज भी ऐसे लोग हैं, जिन्हें केवल धन इकट्ठा करने की ही लगी है और वे इस बात की कोई चिंता नहीं करते कि उनकी जीवन शैली से दूसरे लोग प्रभावित होते हैं? मेरे ध्यान में वे लोग आते हैं, जो ''निर्बल लोगों का शोषण करके, नशे का कारोबार करके, अश्लील सामग्री बनाकर करोड़ों लोगों को खराब करते हैं।''[43] फिर वे भी लोग हैं, जो लाखों लोगों की मौत का कारण बनने वाले हथियार बनाते हैं। वेश्यावृत्ति, जुआ तथा अन्य बुरे काम इसमें जोड़े जा सकते हैं।[44]

परंतु हमें अपनी बात पर आना है: क्या आप या मैं दूसरों के बजाय मुख्यतया केवल अपने बारे में ही सोचने के दोषी हैं? यह प्रश्न ही अपने आप में उत्तर है। एक सबसे बड़ा युद्ध जो हम लड़ते हैं वह ''स्वार्थी'' होना है (2 तीमुथियुस 3:2)। हैनरी वार्ड ने स्वार्थ को ''वह घृणित बुराई, जिसे दूसरों में मिल जाने पर कोई उसे क्षमा नहीं करेगा, परन्तु जो सब में पाई जाती है'' कहा है।[45]

फिलिप्पियों 2:3, 4 में पौलुस ने इस चुनौती को इस प्रकार प्रस्तुत किया है: ''झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।'' उसने निस्वार्थ प्रेम के सिद्ध उदाहरण के रूप में यीशु की ओर ध्यान दिलाया (आयतें 5-8)।

यूहन्ना ने लिखा, ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)। रोम ने जरूरतमंदों को नजरअन्दाज़ किया था। यीशु के पीछे चलते हुए हम ऐसा नहीं कर सकते।

आशीष पाए हुए, परन्तु सताने वाले (18:24)

रोम के पापों के बुर्ज का सिरा मसीही लोगों को इसका सताना था। उसने स्वयं ऐसा किया और साम्राज्य के सभी लोगों को ऐसा करने के लिए उकसाया। अध्याय के अंत में स्वर्गदूत ने बताया कि रोम नष्ट हो जाएगा, ''क्योंकि ... भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों[46], और पृथ्वी पर सब घात किए हुओं का लोहू उसी में पाया गया'' (आयतें 23ख, 24)।[47]

संदर्भ में ''पृथ्वी पर सब घात किए हुओं'' शहीद होने वाले परमेश्वर के सब लोगों को कहा गया है।[48] इनमें से कोई भी रोम में कत्ल नहीं हुआ था; परन्तु जैसा राबर्ट माउंस ने ध्यान दिलाया है, ''रोम पर पृथ्वी पर घात होने वाले सब लोगों का दोष है, क्योंकि वह

सारे संसार पर राज कर रहा है। जहां भी जीवन का बलिदान होता है, वहां ज़िम्मेदारी उसी के द्वारा आती है।''[49]

भूमि में से हाबिल के लहू के पुकारने की तरह (उत्पत्ति 4:10), शहीदों का लहू बदला लेने को पुकारता है (देखें प्रकाशितवाक्य 6:9, 10)। न्याय मापा जाएगा। तराज़ू तौले जाएंगे।

सारांश

अगले पाठ में हम यह चर्चा करेंगे कि परमेश्वर द्वारा रोम को उसका बदला चुकाने पर तराज़ू *कैसे* तौले गए (18:6, 7); परन्तु अभी के लिए मैं यह जोर देना चाहता हूं कि रोम को ''तराज़ू में तौला'' *क्यों* ''गया और वह कम निकला।'' वचन में इसके कम से कम छह कारण बताए गए हैं: वह सुंदर थी, परन्तु उसका पाप स्वर्ग तक पहुंच गया था, वह शक्तिशाली थी, परन्तु उसका प्रभाव भलाई के बजाय बुराई के लिए इस्तेमाल किया गया। वह प्रसिद्ध थी परन्तु घमण्ड से भरी हुई थी। वह धनी थी, परन्तु अत्यधिक फिज़ूलखर्च थी। वह सफल थी परन्तु उसे दूसरों की परवाह नहीं थी। अंतिम बात (जो उसे तराज़ू पर ''दोषी'' ठहराने के लिए काफी थी) यह थी कि उसने पवित्र लोगों को घात किया था।

मुझे गलत न समझें। मैं फिर कहता हूं, सुंदर, शक्तिशाली, प्रसिद्ध, धनी या सफल होना तब तक कोई बुरी बात नहीं है, जब तक हम यह मानते हों कि वे आशिषें परमेश्वर की ओर से हैं और जब तक हम उनका इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए और दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। पौलुस ने कहा कि ''जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुत सी व्यर्थ लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबो देती हैं''(1 तीमुथियुस 6:9)। यही बात उन लोगों के लिए कही जा सकती है, जिनका लक्ष्य जीवन में सुंदर, शक्तिशाली, प्रसिद्ध या सफल होना ही है।

अगले एक पाठ में हम आयत 4 की ताड़ना पर बल देंगे: ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ कि तुम उसके पापों के भागीदार न हो।'' अपने पाठ में दिए गए बल के सम्बन्ध में हम यह प्रासंगिकता बनाएं: बाबुल के मापदण्डों को न मानें। आज बाबुल/रोम का अर्थ हमें लुभाने की कोशिश करने वाला संसार है। हमें उसके मानक को अपनाने से पहले सावधान होना आवश्यक है। पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा हैद्ध: ''इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहा'' (रोमियों 12:2)।

आइए, हम प्रभु के पास आकर उससे चिपक जाएं, ताकि कहीं ऐसा न हो कि हम भी ''तराज़ू में तौले जाएं और कम निकलें।''[50]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

मुख्य प्वायंटों में ''सुंदर परन्तु बुरा''; ''सफल परन्तु स्वार्थी''; ''धनवान परन्तु फिजूल'' जैसे वाक्यांश हो सकते हैं। निष्कर्ष के आरम्भ में सारांश में इस्तेमाल की गई आसान शब्दावली का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

चाहें तो अध्याय 18 को एक ही पाठ में पूरा कर सकते हैं। अगले पाठ ''जब परमेश्वर बत्तियां बुझा देता है'' का इस्तेमाल मुख्य रूपरेखा के लिए करें। फिर इस पाठ से और इस पुस्तक में आगे आए पाठ ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ'' से नोट्स मिलाकर जोड़ लें।

टिप्पणियां

[1]ऐसी दावतें कई-कई दिन या हफ्तों तक चलने वाले कोलाहलमय मामले होते थे। इसे ''शराबियों का जश्न'' कहना गलत नहीं होगा। [2]दानिय्येल 5:4 की भाषा में यह संकेत है: यरूशलेम का मन्दिर नष्ट हो चुका था, जिस कारण उन्हें लगा होगा कि इस्राएलियों का परमेश्वर *उनके* देवाताओं से छोटा है। [3]''मने'' इब्रानी क्रिया से लिया गया है, जिसका अर्थ ''गिनना'' है। [4]''तकेल'' सम्भवतया इब्रानी क्रिया से लिया गया है, जिसका अर्थ ''तोलना'' है। [5]''ऊपर्सीन'' का दोहरा अर्थ है। यह ''बांटना'' के अर्थ वाले इब्रानी क्रिया शब्द से लिया गया है। इसके अलावा इब्रानी में इससे मिलती-जुलती क्रिया *peres* (परेस) है (देखें आयत 28), जो ''फारसियों'' के लिए शब्द से मेल खाता है (फिर से देखें आयत 28)। [6]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे'' पाठ देखें। [7]डैनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1935), 206. [8]अध्याय 18 में दिए गए विवरण पूरी तरह से रोम नगर पर फिट बैठते हैं, जो इस बात का अतिरिक्त प्रमाण है कि यूहन्ना के समय में ''बड़ा बाबुल'' रोम नगर को ही कहा गया था। [9]प्राचीन जगत में मोतियों का विशेष महत्व था (देखें 21:21)। [10]जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट'स फेमिलयर कोटेशंस,* सोलहवां संस्क., संपा. *जस्टिन कैप्लन* (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कं., 1992), 451 में उद्धृत एडगर एलन, ''टू हेलन'' (1831), स्टैंज़ा 2.

[11]ई. ए. जज, ''रोम,'' *बेकर इन्साइक्लोपीडिया ऑफ बाइबल प्लेसस,* परामर्शी संपा. जॉन जे. बिमसन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1995), 268. [12]''ढेर'' उस यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका मूल अर्थ ''साथ चिपका हुआ'' है। [13]अध्याय 18 अधिकतर पुराने नियम के उद्धरणों का संग्रह, विशेषकर बाबुल और सोर के विनाश की घोषणा करने वाली आयतों में से है। उदाहरण के लिए इस आयत में यिर्मयाह 51:9 की झलक मिलती है। (देखें एज्रा 9:6.) पुराने नियम के कुछ हवाले इस पाठ में और कुछ अगले पाठ में दिए गए हैं। अध्याय की इस विशेष बात पर चर्चा अगले पाठ में की जाएगी। [14]थॉमस फुल्लर, ''द होली स्टेट एंड द प्रोफेन स्टेट'' (1642). लुईस कोपलैंड, संपा., *पापुलर कोटेशंस फ़ॉर ऑल यूज़र्स,* संशो. संस्क. (गार्डन सिटी, एन. वाई.: डबलडे एंड कं., 1961), 414 में उद्धृत। [15]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 145. रोमी इतिहासकारों के कुछ उदाहरण और उद्धरण *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे'' पाठ में मिलते हैं। [16]जी. बी.केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट ऑन द डिवाइन* (लंदन: एडम एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 226. पौलुस का जहाज़ पुतियुली बन्दरगाह पर ठहरा था। पुतियुली मिस्र और पूर्व से आने वाले माल और यात्रियों को उतारने की बड़ी बन्दरगाह थी। [17]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''वह बड़ा भरमाने वाला'' पाठ देखें। [18]केयर्ड, 231. [19]जॉर्ज

एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 238-43. [20]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 372. जिस समाज में आप रहते हैं, उससे और उस समाज में रहने वालों को भौतिकवाद प्रभावित करने के ढंग पर इसकी प्रासंगिकता बनाएं। कई अमेरिकी टीकाकार इसे अमेरिका पर लागू करते हैं।

[21]कोपलैंड, 243 में उद्धृत। [22]''बाइबल के लेखकों के संसार में विधवा को निर्धनता और असहायपन का *बेहतरीन* नमूना माना जाता था'' (जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974], 266)। [23]आयत 7 की तुलना यशायाह 47:7, 8 से करें। [24]केयर्ड, 223. [25]परसी बी. शैली, ''ओज़ीमेंडियास'' (1817)। बार्टलेट, 406 में उद्धृत। [26]पाठ के इस भाग में अलग-अलग प्रासंगिकताएं होंगी, निर्भर करता है कि आप कहां रहते हैं। संसार के कुछ भागों में कई लोग विलासिता में रहते हैं, जबकि कुछ लोग निर्धनता में रहते हैं। संसार के अन्य भागों में कुछ लोग विलासिता में रहते हैं, जबकि अधिकतर लोग निर्धनता में रहते हैं। परिस्थिति जैसी भी हो, स्वार्थ और फिज़ूलखर्ची बुरी है, तौ भी हम केवल दूसरों की ओर ही ध्यान देने की चिन्ता न करें। कई बातें उपस्थित लोगों पर भी लागू हो सकती हैं। हम में से हर किसी को दूसरों की आवश्यकताओं का पता होना चाहिए, हमारे पास चाहे कितना भी अधिक चाहे कितना भी कम क्यों न हो। [27]KJV में अजीब वाक्यांश ''lived deliciously'' है। [28]आई. टी. बेकविद, *द आपेकलिप्स ऑफ़ जॉन,* 713. राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 324. [29]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 615. [30]बार्कले, 155.

[31]दी गई वस्तुओं (मूल यूनानी शब्दों और उनके अर्थों) के बारे में काफी कुछ लिखा जा सकता है। उदाहरण के लिए ''बिजोरा लकड़ी'' दुर्लभ किस्म की आयातित लकड़ी थी, जिसकी मांग इसके बीज पर अनोखे नमूने के लिए होती थी। फिर यूनानी शब्द का अनुवाद ''रथ'' बहुत धनवान लोगों के लिए बनाए गए चार पहियों वाले सुसज्जित रथ के लिए होता था। परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा कही बात को समझाने के लिए स्थानीय भाषा में इस्तेमाल शब्द काफ़ी है। [32]अनुवादित शब्द ''फल'' यूनानी भाषा के नये नियम में केवल यहीं मिलता है; इसका अर्थ केवल मौसम के चरम पर मिलने वाले पके या रसे फलों के लिए है। [33]यह अध्याय में और कहीं अनुवादित शब्द ''कामुक'' या ''विलासितापूर्ण'' से अलग है। यूनानी शब्द का मूलत: अर्थ ''चिकनाई वाली चीज़ें'' है, परन्तु इसे अलग-अलग अनुवादों में कई शब्दों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। [34]यह यूनानी शब्द ''चमकीला'' की बात करता है। [35]माउंस, 329. रोम की विलासिता और बदचलनी पर जानकारी बार्कले 154-64 में दी गई है। [36]लाइवी (टाइटस लिवियुस; 59 ई.पू.-17ई.), ''हिस्ट्री।'' कोपलैंड, 293 में उद्धृत। [37]KJV में नीतिवचन 18:9 भी देखें (यद्यपि ''waster'' शब्द का अर्थ ''बर्बाद करने वाला'' हो सकता है; देखें NASB)। जहां आप रहते हैं वहां इसे प्रासंगिक बनाएं। किसी को ''व्यर्थ'' कहना इस पर निर्भर करता है कि कोई कैसे समाज में रहता है और उसका पालन-पोषण कैसे हुआ। हो सकता है कि एक को ''व्यर्थ'' लगने वाली बात दूसरे को बेकार न लगती हो (देखें मत्ती 26:8)। परन्तु बाइबल में विश्वास करने वाले सब लोग इस सामान्य नियम पर सहमत हो सकते हैं कि फिज़ूलखर्ची गलत है। [38]मार्टिन फ्रैंज़मैन ने यह ध्यान दिलाते हुए कि यह आयत ''इस महंगे प्रदर्शन को निर्दयता पूर्वक रेखांकित करके चिह्न लगाती है'' इसे ''नये नियम में दासता पर सबसे कठोर बात'' कहा (*द रैवलेशन टू जॉन* [सेंट लुईस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976], 122)। [39]कई लोग रोम की आधी जनसंख्या तक जाने का अनुमान लगाते हैं। [40]वियर्सबे, 615.

[41]''प्राणों'' के लिए यूनानी शब्द का अर्थ कई बार ''जीवनों'' होता है। गुलामों की मण्डी को *somatemporas* अर्थात ''वह जगह जहां प्राण बेचे जाते हैं'' कहा जाता था। [42]हेनरी बी. स्वेट, *द आपेकलिप्स ऑफ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 235. [43]फिलिप ई. ह्यूस, *द बुक ऑफ द रैवलेशन: ए कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1990), 189. [44]मैं आपको सूची पूरी करने दूंगा। इसे

उस समाज में लागू करें जिसमें आप रहते हैं। अमेरिका में जिम मैक्गुइगन ने अल्कोहल और तम्बाकू में दिलचस्पी जोड़नी थी और मैं भी ऐसे ही करता। [45]हरबर्ट वी. प्रोचनो, *ए डिक्शनरी ऑफ विट, विज़डम एंड सैटायर* (न्यू यार्क: पापुलर लाइब्रेरी, 1964), 242 में उद्धृत। [46]''भविष्यवक्ता'' और ''पवित्र लोगों'' दो अलग-अलग समूह नहीं थे; ''भविष्यवक्ता'' ''पवित्र लोगों'' (मसीही लोगों) के सामान्य वर्ग के अन्दर विशेष वर्ग था। दोनों शब्दों से यही संकेत मिलता है कि *सब* मसीही जो शहीद किए गए थे। [47]23ख और 24 आयतों की तुलना यहेजकेल 24:6, 7 से करें। [48]कइयों का मत है कि ''पृथ्वी पर सब घात किए'' में रोम के सैनिक युद्धों में मारे जाने वाले *सब* लोग थे (चाहे वे मसीही थे या नहीं)। यह उपयुक्त तो हो सकता है, परन्तु यहां पर बल *परमेश्वर* के लोगों के घात होने पर है। [49]माउंस, 335. मत्ती 23:35 में यीशु ने यरूशलेम पर ऐसी ही बात कही। [50]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो अपने सुनने वालों को मसीही बनने या यदि वे अविश्वासी मसीही है तो उन्हें प्रभु की ओर वापस आने को प्रोत्साहित करें। मसीही बनने पर यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27 आयतें मिलाई जा सकती हैं। बहाल होने अर्थात प्रभु में वापस आने के लिए प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9 को मिलाया जा सकता है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. दानिय्येल 5 अध्याय में दीवार पर हाथ से लिखने की कहानी पढ़ें। क्या आपको लगता है कि उस कहानी को प्रकाशितवाक्य 18 वाले बड़े बाबुल पर लागू किया जा सकता है? क्या इसे आज के लोगों पर लागू किया जा सकता है?
2. रोमियों 1:24-32 में नये नियम के समयों में दी गई पापों की रूपरेखा पर चर्चा करें। क्या यही पाप आज भी पाए जाते हैं?
3. क्या आपको लगता है कि नीतिवचन 14:34 आज भी सत्य है? क्या उस देश के लिए जिसमें आप रहते हैं, इसमें कोई संदेश है।
4. क्या बाइबल सिखाती है कि हर किसी का चाहे वह आप ही हों, प्रभाव होता है? उन लोगों के उदाहरण दें, जिन्होंने नकारात्मक या सकारात्मक रूप से आपको प्रभावित किया है।
5. बाइबल में घमण्ड के विरुद्ध कई चेतावनियां दी गई हैं। इस पाठ में दी गई चेतावनियों के अलावा क्या आप बाइबल की अन्य चेतावनियों के बारे में विचार कर सकते हैं?
6. भंडारीपन की बाइबल की अवधारणा पर चर्चा करें। बताएं कि यह अवधारणा हमें फिज़ूल खर्च न करने की शिक्षा कैसे देती है।
7. अलग-अलग लोगों के लिए ''खर्चीला'' होने के अलग अर्थ हो सकते हैं (देखें मत्ती 26:8)। आपके लिए इसका क्या अर्थ है?
8. आमतौर पर कहा जाता है कि हर पाप का कारण मूलत: स्वार्थ ही होता है। क्या स्वार्थी न होना कठिन है?
9. हमारे पाठ में इस्तेमाल हुए वचन में दासता का नकारात्मक विचार मिलता है। आमतौर पर नया नियम *आज्ञा* के बजाय *सिद्धान्त* के द्वारा दासता की निंदा करता है। आपको क्यों लगता है कि यह ऐसा था? दासता को मिटाने के लिए लोगों को बाइबल की किस शिक्षा ने उकसाया?
10. रोम ने संसार को अपने मानदण्ड मानने के लिए प्रभावित किया। क्या आज भी संसार

अपने मानदण्डों को मानने के लिए कइयों को प्रभावित करता है। हम संसार से प्रभावित होने से कैसे बच सकते हैं ?